हिंदी

हिन्दी सन्तोकी ज्ञान गिरा,
वह भगतो की भगती मधुरा
साखी, सबद, अभंगोकी यह वाणी विमल तरंगा है ।
हिंदी भारतकी गंगा है ।
– अम्बाशंकर नागर

'संवेदना - एक लाश की !'

डॉ. शेख अकीला महेबूब

भाषा और भाव न किसी के मुहताज होते हैं और न ही उन्हें किसी सीमा में बाँधकर रखा जा सकता है । भावों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होकर ही रहती है । इसका सबल प्रमाण है-हिंदी तर भाषी प्रदेश के अहिंदी भाषी कवि डॉ. हनुमंत रणखांबजी । आपकी हिंदी कविताएँ हिंदी काव्य जगत् की अमूल्य निधि है। हिंदी साहित्य हमेशा ही यथार्थ से जुड़ा रहा है । 'लाश' काव्य संग्रह की कविताएँ इस श्रृंखला की एक छोटी सी कड़ी है। इन कविताओं में यथार्थ आदर्श, संवेदना, निराशा, पीड़ा, वैयक्तिकता, सामाजिकता आदि सब कुछ है । ये कविताएँ हमारे परिवेश का प्रतिबिंब है । इनमें कवि के मन की पीड़ा के साथ कवि का आशावाद भी है ।

'लाश' संग्रह में भावात्मक और कलात्मक सौंदर्य का सुंदर संगम हुआ है । इस 'लाश' का 'पोस्टमार्टम' कितनी ही बार किया जाए, हर बार एक नया अंग, नया भाव, नया विचार, जीवित हो जाता है । कवि की अभिव्यक्ति में अनुभूति की गहनता दिखाई देती है । कवि ने पूरी ईमानदारी और सच्चाई के साथ अपने भावों की परतों को खोलकर रख दिया है । साहित्य और समाज के प्रति कवि की प्रतिबद्धता विलक्षण है । जहाँ आधुनिक समाज की सोच और संवेदना त्रस्त और भ्रष्ट हो रही है वहाँ कवि की लेखनी कर्म, त्याग, प्रेम और कर्तव्य की भावना जगा रही है ।

काव्य संग्रह की आरम्भिक कविताएँ 'मैं' से शुरु तो हुई पर तुरंत ही समाज और राष्ट्र के व्यापक फलक पर फैल गई । आज की विषम आर्थिक परिस्थितियों ने समाज की सोच और व्यवहार को निम्नस्तर तक पहुँचा दिया है । 'दुनिया' कविता में कवि ने इस मानसिकता पर प्रहार तो किया पर कवि की निराशा मृत्यु की हद तक पहुँच जाती है । तब एक क्षण के लिए पाठक भी सोचने को मजबूर हो जाता है और अगले ही क्षण कवि ''जीवन से मुक्ति''की बात छोड़कर कहता है -

''पर चिंता नहीं, कर्म किये जा
और याद रख, सुख-दुख धूप छाँह है
जब एक ओर बनता गड्ढा
तब दूसरी ओर बनता प्रासाद बड़ा ।।''

कवि का यह आशावाद पाठक को भी आशावादी बना देता है । कवि को जहाँ भी मौका मिला कवि ने 'चिर कर्म करने' का उपदेश दिया है ।

अपने परिवेश के प्रति कवि की प्रतिबद्धता विलक्षण है । महाराष्ट्र का मराठवाडा क्षेत्र हमेशा ही सूखा और अकाल ग्रस्त रहा है । कवि के शब्द -

''यह कौन ?
मौन ?
खेतों को निर्निमेष निहारता
अपने दृगों से आँसू बहाता...
तूने ही किया हाहाकार।''

आज मराठावाडा क्षेत्र का हर किसान इस 'निष्ठुर','आत्याचारी','पापी','दुश्मन', अकाल से पीड़ित है। यह किसान भ्रष्टाचारी शासन व्यवस्था से भी पीड़ित है ।

'दिल के अरमानों को जलाकर
बैंकों का कर्जा निकालता,
पर कहाँ मिलता पूरा कर्जा भी ?'

'किसान और ये' कविता के ''शब्द बदले, सिर्फ शब्द !'' ये शब्द बहुत कुछ कह जाते हैं ।

भारतीय संस्कृति में त्यौहारों का विशेष महत्व है । 'होली' के माध्यम से कवि ने पुरानी परंपराओं को जलाकर नवीनता का संदेश दिया है । कवि ने गणेशोत्सव पर्व मनाने के ढंग और युवकों की प्रवृत्तियों का पर्दाफाश करने की हिम्मत दिखाई है ।

''युवतियाँ नाचती
और हम लगाते चक्कर
नव युवतियों के इर्द-गिर्द
ट्रम्पेट,
कारनेट बजते''
गुलाल फेंकते
और
''गणपती बाप्पा मोरिया'' कहते।

'वैयक्तिकता' इस संग्रह की सबसे बडी विशेषता है। दुनिया, विरह, अनजानी, विदाई, अभिनव, साथी, मुझे अपनों ने सताया है, नीडस्थ पंछी, कहाँ तक, कामना, खुद जलता ही रहा, यादें आदि अनेक कविताओं में कवि की वैयक्तिक भावनाएँ, दिल का दर्द और विरह है। पर इस वैयक्तिकता में सामाजिकता और जीवन की सच्चाई है। कवि 'खुद जलता ही रहा ।' 'अभिनव साथी' पीठ पीछे निंदा करते रहें । 'अनजानी' ने दिल का दर्द नहीं समझा । 'विरह' के कारण 'कामना' की कब्र बनानी पड़ी । कवि को अहसास हुआ कि उसकी बगिया वीरान बनी है । कवि की 'यादें' जिंदा रहने की पहचान हैं ।

कवि में कहीं निराशा है तो कहीं उपदेशात्मकता । अहं, स्वधर्म, प्यार को प्यार कहो, समझ में नहीं आता, चिर कर्म कर, आज का विद्यार्थीआदि कविताओं में यथार्थता और उपदेशात्मकता हैं। आज के नेताओं का यथार्थ वर्णन 'वे और ये' कविता में करते हुए समाज को जगाने का प्रयत्न किया है । कवि ने यथार्थता का दामन छोडा नहीं है। अध्यापक के जीवन की सच्चाई को बहुत ही सुंदर शब्दों में व्यक्त किया गया है –

''वही गुरु
ब्रहमा, विष्णु, महेश
आधी पगार पर
चिल्लाता, चीखता
पर उनकी
, कोई नहीं सुनता ।''

दूसरी ओर मनुष्य जीवन की सच्चाई यह है –

''दो दिन रोते – चिल्लाते
पुनः अपने कर्म में लगते
निश्चित दिन पर श्राद्ध करते
मनुज–मनुज को भूल जाते ।''

'सफेद न्याय' में चाय पिलाना, काम निकालना इस जीवन सत्य को सामान्य शब्दों में व्यक्त किया गया है ।

'महाकवि 'दिनकर' के प्रति' कवि की भावपूर्ण श्रद्धांजली ही है । 'सायकल' की प्रतीकातमकता मन को छू जाती है । कवि को गम है कि मानवीय मूल्य सभ्यता की आड़ में टूट रहें हैं । इसीलिए कवि गीत गाता है शापित और दुर्भाग्य से प्रताड़ित के लिए । 'लाश' में तो संवेदना ही संवेदना है । यह लाश मन को झकझोर देती है ।

'लाश' संग्रह में कथ्य और शिल्प का सुंदर सामंजस्य है । इस में भाव और विचार का सुंदर समन्वय है । इसमें आम आदमी और उसकी व्यथा है। कवि के भावों के साथ कुछ मराठी शब्द भी स्वाभाविक और सहज रूप से पूरी शक्ति के साथ बहने लगते हैं।

'लाश' की संवेदना की तलाश ने मुझे एक ऐसे व्यक्तित्व का परिचय कराया जो हमारी ही मिट्टी से जुड़ा हुआ है ।

* * *

आँसू

कु. धुमाळ सुवर्णा बाळासाहेब
(एस.वाय.बी.कॉम.)

बड़ी अजीब चीज है ये आँसू
निकलते हैं गम पर,
निकलते हैं खुशी पर
अगर किसी में दम है,
तो देख ले उन्हें रोककर
रोकने से कब ये आँसू रुके है
अच्छे–अच्छे हँसनेवाले भी,
इसके सामने झुके हैं ।

'मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में नारी ।'

प्रा. साहेबराव गायकवाड

आज जीवन के हर क्षेत्र में मनोविज्ञान की पहुँच है । जीवन का हर कार्य मन से निर्देशित होता है। मन में उत्पन्न विकारों का अध्ययन मनोविज्ञान करता है। फ्रायड, यडलर, युंग आदि मनोवैज्ञानिकों की विचारधारा इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है ।

आज का मानव जीवन दुःख-दर्द से भरा है । दुःख-दर्द से भरे जीवन का चित्रण करने का प्रयास मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास करते हैं । मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों का ध्यान घटना की अपेक्षा व्यक्ति के अन्तर्मन की यात्रा करता है । आर्थिक विषमता के कारण बढती हुई, असाधारणता, कुंठित नर-नारियों की जीवन गाथा, अपराधी मनोवृत्ती का दिग्दर्शन, नारी जीवन की मानसिक दुर्बलता, अबलानारी की कहानी आदि बातों का अध्ययन मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास करता है ।

वैसे देखा जाए तो हिंदी में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना प्रथम महायुद्ध के पश्चात हुई । मनोवैज्ञानिक दृष्टि के उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में सर्वप्रथम प्रवेश का श्रेय मुंशी प्रेमचंद को अवश्य दिया जा सकता है । मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में कथानक के बाह्य स्वरुप को अधिक महत्व न प्रदान कर चरित्रों के मानसिक और भावनात्मक पक्ष पर सबसे अधिक बल दिया जाता है । आधुनिक समय में मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों ने कुछ ऐसी अनूठी शैलियों को जन्म दिया है जो मनुष्य की गूढ मानसिक प्रवृत्तियों के यथार्थ तह तक पहुँच जाती है ।

हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में अधिकतर मनुष्य के अवचेतन का ही विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है, क्योंकि हिंदी की परम्परागत औपन्यासिक प्रवृत्ति को देखते हुए यही नवीन तत्व स्पष्ट होता है। प्रेमचंद युग में जिस मनोवैज्ञानिक औपन्यासिक परंपरा का जन्म हुआ, उसमें मनुष्य के चेतन, अर्धचेतन व अचेतन सभी अवस्थाओं का चित्रण स्पष्ट रुप से किया गया है । मनोविश्लेषणात्मक तत्वों का प्रबल आग्रही मनोवैज्ञानिक तत्वों का स्वरुप निर्धारित करता है । इसकी कथावस्तु इसलिए गौण हो जाती है क्योंकि केवल कथावस्तु प्रस्तुत करना इस प्रकार के उपन्यासों का एकमात्र ध्येय नहीं रहता । वे परिस्थिति विशेष का विश्लेषण करते हैं और यह सिद्ध करने की चेष्टा करते है कि एक विशेष पात्र, विशेष परिस्थिति में कोई प्रतिक्रिया किस प्रकार, किस लिए करता है तथा उसका उसके चेतन, अचेतन, अर्धचेतन, किस अवस्था से कैसा और किस प्रकार का सम्बन्ध रहा है ।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में सामान्य उपन्यासों की अपेक्षा पात्रों की संख्या भी अपेक्षाकृत कम होती है, क्योंकि प्रत्येक पात्र का मनोविश्लेषण अनिवार्य होता है, इसीलिए अधिकांश मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का विस्तृत कलेवर होते हुए भी उनमें पात्रों की संख्या कम है । उदा. 'अपराध और दंड' में केवल पाँच दिन, 'ब्रदर्स करम जोफ' में सात दिन, 'द इंडिया में आठ दिनों की कथा का वर्णन है । अज्ञेय के 'शेखर:एक जीवनी' में केवल एक रात देखे गये विजन का रुप है और 'नदी के द्वीप' में डेढ वर्ष की कथा है । निर्देशक में तीन माह की । इसके अतिरिक्त 'सुनीता', 'त्यागपत्र', 'कल्याणी' आदि सभी उपन्यासों में अपेक्षाकृत पात्रों की संख्या कम है ।

प्रेमचंद के बाद इस परंपरा में जैनेंद्र कुमार का नाम उल्लेखनीय है । इसके अतिरिक्त इलाचन्द्र जोशी, उपेन्द्रनाथ अश्क, अज्ञेय आदि उपन्यासकारों के उपन्यासों को रखा जा सकता है। बाल मनौवैज्ञानिक से सम्बन्धित उपन्यासों की रचना हिंदी साहित्य में कतिपय विद्वानों ने ही की हैं। उदा. स्वरुप डॉ. प्रताप नारायण टंडन कृत 'अन्धी दृष्टि' को इस क्षेत्र में रखा जा सकता है ।

कुछ उपन्यासों का विवेचन यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिन उपन्यासों का जिक्र हम कर रहे हैं उनमें नारी मन की अवस्थाओं पर प्रकाश डाला है ।

* त्यागपत्र (जैनेन्द्रकुमार) :

इसमें माता-पिताहीन कुमारी मृणाल की कहानी है । वह अपने भाई-भावज के यहाँ पलती है । स्कूली जीवन में उसका लगाव उसकी सखी शीला के भाई से हो जाता है । परंतु उसका विवाह एक अधिक उम्र के व्यक्ति से हो जाता है । वैवाहिक सम्बंध अच्छे नहीं रहते और एक दिन

गर्भावस्था में ही मृणाल अपने भाई के घर आ जाती है । जैनेन्द्र ने यहाँ मृणाल के चरित्र द्वारा आत्म-व्यथा और आत्म-पीडन के जीवनादर्श का चित्रण किया है पग-पग पर अन्याय और अत्याचार मिलते रहने पर भी मृणाल उस असत् के प्रति हिंसात्मक प्रतिक्रिया का आश्रय नहीं लेती, उसका समस्त व्यक्तित्व अभुक्त वासना से आलोडित है, फिर भी वह उसे व्यक्त न करके तप और साधना के मार्ग पर आरूढ रहती है ।

* कल्याणी (जैनेन्द्रकुमार) :

इसमें कल्याणी नाम की एक सिंधी परिवार की कन्या की कहानी है, जो विदेश से डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त करके भारत आती है । विदेश में ही उसका घनिष्ठ सम्बन्ध एक भारतीय पुरुष से हो गया था । परंतु भारत में आकर वह डॉ. असरानी के साथ विवाह कर लेती है । विवाह के उपरान्त उसका दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता, क्योंकि वह एक तो अपने पहले प्रेमी को भुला नहीं पाती और दूसरे डॉ. असरानी अधिक आर्थिक लाभ के लिए उसे प्रैक्टिस करने पर जोर देता है । वह प्रैक्टिस करने लगती है परंतु उस पर फिर एक डॉ. भटनागर और एक रायसाहब को लेकर लांच्छन लगाये जाते है । इसी कारण उसका पति डॉ. असरानी उसे घर से निकाल देता है ।

* सुखदा (जैनेन्द्रकुमार) :

इस उपन्यास में एक बडे घर की बेटी सुखदा की कहानी है । जिसका विवाह एक सौ पचास रुपये माहवार पानेवाले पुरुष कान्त से होता है । पहले तो कुछ दिन दाम्पत्य जीवन सुखमय चलता है परंतु सुखदा के सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यों में भाग लेने के कारण पति और पत्नी में विरोध पैदा हो जाता है । सुखदा एक क्रान्तिकारी संघ की उपाध्यक्षा हो जाती है और उस संघ के एक युवक लाल के प्रति उसका आकर्षण बढ जाता है ।

* लज्जा (इलाचन्द्र जोशी) :

इस उपन्यास का पहला नाम घृणामयी था । इस उपन्यास में एक ऐसी आत्मपीड़ित नारी की कथा है, जो स्वयं अपने पाप के आग में जल रही है। यह नारी अपने सुकुमार और विद्वान भाई तथा अपने पिता की मृत्यु का कारण स्वयं को मानती है । इसका चरित्र घृणास्पद है ।

* पर्दे की रानी (इलाचन्द्र जोशी) :

इस उपन्यास में निरंजना और शीला दो प्रमुख स्त्री पात्र है । नायिका निरंजना श्यामा नामक वेश्या की पुत्री है, जिसको मनमोहन सिंह ने पाल-पोसकर बड़ा किया हैं । परंतु उसे भी वे वेश्या से कम नहीं समझते । अपनी इच्छा की पूर्ति न होते देख मनमोहन सिंह निरंजना को उसके जीवन का रहस्य बता देते है , जिसको सुनकर निरंजना हीनता की ग्रन्थि से पीड़ित हो जाती है ।

* वे दिन (निर्मल वर्मा) :

मानवीय सम्बन्धों की जटिलता और यूरोपीय जीवन से व्याप्त आतंक को 'वे दिन' उपन्यास में मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है । 'वे दिन' उपन्यास इन्दी और रायना के सम्बन्ध के गिने चुने साढे तीन दिनों की कहानी है । इन्दी ने रायना से मिलने पर ही प्रथमतः आत्मीय लगन का अनुभव किया, जो उसे अन्य लडकियों से मिलनेपर नहीं प्राप्त हुआ था। परंतु रायना का जाक के साथ सम्बन्ध आत्मीयता का रहा है । उपन्यास की कथावस्तु एक उन्मुक्त यौन जीवन से युक्त है ।

* मछली मरी हुई (राजकमल चौधरी) :

'मछली मरी हुई' इस उपन्यास में समलिंगकामी नारियों एवं रुग्ण आसक्ति से पुरुषों की बर्बरता का बड़े साहस के साथ चित्रण किया गया है । उपन्यास में शीरी बड़ी बहन के प्यार में पड़कर समलैंगिक कामुकता में डूब जाती है । सिटिजन्स क्लब में कल्याणी की पुत्री प्रिया को देखकर उसे बड़ी बहन के स्थान पर तृप्ति का साधन बनाती है ।

* अनदेखे अनजान पुल (राजेंद्र यादव) :

'इस उपन्यास में कुरुपता से उत्पन्न हीन भावना से ग्रस्त नारी जीवन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण मात्र है । उपन्यास में प्रमुख पात्र निम्मी है, जो हीनता ग्रन्थि से ग्रस्त है । चारों ओर से स्वयं को उपेक्षित पाकर निम्मी इस दुनिया से उठ जाना ही बेहतर समझती है ।

* अंधेरे बंद कमरे (मोहन राकेश) :

यह उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर भारत के आधुनिकतम जीवन की निराशाओं और आकांक्षाओं का अंकन है । मोहन राकेश ने इस उपन्यास को एक साथ रखने का प्रयास किया है । पात्र निलीमा में कुण्ठा है, खीझ है ।

* अपने - अपने अजनबी (अज्ञेय) :

मृत्यु-साक्षात्कार को विषय बनाकर अस्तित्ववादी दृष्टि से लिखा गया 'अपने-अपने अजनबी' एक विश्लेषणात्मक उपन्यास है । इस उपन्यास में दो नारियाँ

(योके और सेलया) आकस्मिक रुप से बफ में दबे काठ के मकान में तीन-चार महिनों के लिए कैद हो जाती है। दोनों स्वभाव और विचारों से भिन्न है किंतु परिस्थितिवश दोनों साथ रहने के लिए विवश है। योके सेलया के प्रति विरोधभाव छिपाने का प्रयास करती है। जीवन में जीने की आकांक्षा योके में दिखाई देती है तो वृद्धा सेलया उस भय से मुक्त है, क्योंकि वह मृत्यु-साक्षात्कार के एक अनुभव से गुजरकर दृष्टि पा चुकी है।

* शहर में घूमता आईना (उपेन्द्रनाथ अश्क) :

समाज के शौनशोषकों, पागलों तथा अवसरवादियों का चित्रण यह उपन्यास है। उपन्यास का नायक चेतन जिन्दगी की ठोकरें खाते-खाते एक साप्ताहिक में साठ रुपये पर सम्पादक बनता है जबकि उसके मित्र उससे आर्थिक दशा में कहीं आगे निकल गये थे। इसके कारण चेतन में हीनता भाव पैदा होता है। दमित कामवासना के कारण बने पागलों का वर्णन तथा समलिंगी आकर्षण के कुछ नमुने उपन्यास में प्रस्तुत हैं।

* बारह घण्टे (यशपाल) :

इस उपन्यास में नर-नारी के परस्पर आकर्षण अथवा दाम्पत्य सम्बन्ध को आधुनिक युग भावना के रुप में परखा गया है। विनी एक विधवा और फेंटम एक विधुर। दोनों एक ही वेदना से पीड़ित दो विपरीत लिंगी व्यक्ति एक-दुसरे के सम्पर्क में आते हैं और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से वही करते हैं जो साधारण नर-नारी करते है।

* एक कटी हुई जिन्दगी एक कटा हुआ कागज (लक्ष्मीकान्त वर्मा) :

एक विक्षिप्त व्यक्ति का आस्थाहीन जीवन नये तकनीकी रुपमें प्रस्तुत करने का प्रयत्न लक्ष्मीकान्त वर्मा ने अपने इस उपन्यास में किया हैं। उपन्यास में एक विधुर के जीवन का चित्रण हुआ है। नायक 'अनाम' जीवन में भावों की अपेक्षा विचारों को महत्व देता है।

* बैसाखियोंवाली इमारत (रमेश बक्षी) :

रमेश बक्षी का यह उपन्यास घिनौने प्रेम और आत्मभोगी चिन्तन के गाल पर भरी सड़क पर एक तमाचा है। उपन्यास का नायक अनाम कलकत्ते में अंग्रेजी पत्र का प्रमुख संवाददाता है। पत्रकार का व्यक्तित्व एण्टी-लव से बना होने के कारण वह न तो पत्नी से स्थायी प्रेम कर पाता है, न मिस जायस से, न वसुधा से।

* तीसरा आदमी (कमलेश्वर) :

यह उपन्यास वर्तमान आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर मध्यवर्गीय व्यक्ति चेतना के बदलते हुए स्परुप का मनोवैज्ञानिक अंकन करता हैं। तीसरा आदमी की कथा का प्रमुख पात्र मैं है जिसकी शादी चित्रा से हो जाती है। रोजी-रोटी की तलाश में दोनों पति-पत्नी दिल्ली में आते हैं। सुमंत के एक कमरे में रहते हैं और यहीं से धीरे-धीरे सुमंत का अस्तित्व दोनों के बीच मंडराने लगता है। चित्रा बच्चों के सहारे जीवन जीती है क्योंकि मैं संशय का शिकार होकर घुटन, छटपटाहट में व्यस्त रहता है, जिसके कारण उनका सांसारिक जीवन सुखी नहीं हो पाता।

* दूसरी बार (श्रीकान्त वर्मा) :

श्रीकांत वर्मा का उपन्यास 'दूसरी बार' स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के संसार को आधुनिक बोध रुप में प्रस्तुत करता है। उपन्यास का नायक मैं घोर अहम्वादी, काल्पनिक और वास्तविकता से दूर रहनेवाला है। बिन्दो के आगमन से वह जीवनगत यथार्थ में आने के बजाय वह निरर्थक दुनिया में विश्वास करता है। बिन्दो उसे एक समस्या लगती है। वह उसे एक घमण्डी औरत लगती है। बिन्दो का उसे साथ व्यवहार और संशय उसे नित्य झूठा लगता है।

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि मनुष्य की रुग्ण मानसिकता, हीनता की भावना, कुण्ठा, खीझ, तान-तनाव, अहंवादी मन, विफलता, दमित वासना, कामवासना, अतृप्त कामवासना, घृणा, द्वेष, वेदना, पीड़ा, निराशा, एण्टीलव आदि समस्याओं से लबालब भरा हुआ है मनोवैज्ञानिक उपन्यास साहित्य। आज आधुनिक काल सभी दृष्टियों से आधुनिक रहा। समाज में नारी को समानता का दर्जा मिला। वह शिक्षित होकर अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हो गयी। अधिकार कैसे प्राप्त करना यह आज की नारी समझ चुकी है। वह अब अबला भी नहीं और परावलंबी भी नहीं। किन्तु आज भी समाज में कुछ लोग स्त्री को मात्र शरीर समझते हैं। आधुनिक काल में हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी के विभिन्न रुपों का चित्रण हुआ है।

संदर्भ :

१) नारी विमर्श की नयी दिशाएँ - डॉ. रेणुका मोरे
२) आधुनिक हिंदी साहित्य विविध परिदृश्य - डॉ. पंडित बन्ने
३) हिंदी उपन्यास सातवा दशक - जयश्री बरहाटे
४) साहित्यिक निबंध आधुनिक दृष्टीकोन - बच्चन सिंह
५) हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार - डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना

महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'घीसा' में गुरुभक्ति

प्रा. डावरे रोहिणी

प्रस्तावना :

अपने देश की जो सांस्कृतिक परंपरा रही है, महादेवी सच्चे अर्थ में उसकी प्रतिनिधि हैं । महादेवी एक ऐसा नाम जो मानव जीवन के तीव्र दुखमय ताप में अपनी साहित्यरुपी सुख की बौछार कर देता है । करुणा एवं वेदना भाव से युक्त तथा स्नेह का झरना बहानेवाली महादेवीजी सदैव खिलखिलाती, मुस्कराती हुई ममता का दान करती रही है ।

आधुनिक युग की कवयित्रियों में सुश्री महादेवी वर्मा का स्थान प्रमुख है । वे छायावादी, रहस्यवादी कवयित्री से उपर उठकर सांस्कृतिक कवयित्री है, जिनमें सर्जनात्मक काव्य की सरसता और चिंतनात्मक दर्शन की गंभीरता, दोनों तत्व समान रुप से मिलते है। महादेवी वर्मा कवयित्री हैं, चित्रकार हैं, एवं संगीतज्ञा भी है । उनका समग्र व्यक्तित्व एक कलाकार का व्यक्तित्व है । उन्होंने लिखा है – 'कला के पारस का स्पर्श पा लेने वाले का कलाकार के अतिरिक्त कोई नाम नहीं, साधक के अतिरिक्त कोई वर्ग नहीं, सत्य के अतिरिक्त कोई पूँजी नहीं, भाव सौंदर्य के अतिरिक्त कोई व्यापार नहीं और कल्याण के अतिरिक्त कोई लाभ नहीं ।'

साहित्य के इतिहास में महादेवी के समान मौलिक चिंतनशीलता और विशद कल्पना के उदाहरण कम ही मिलेंगे । उनका समस्त साहित्य आस्था, उपासना, और उत्सर्ग का साहित्य है । भावना, विचार और चिंतन के क्षेत्र में उन जैसी प्रौढ और आत्मविश्वासी नारी का मिलना कठिन है । वे आस्था, आनंद और सौंदर्यमय जीवन की गायिका रही है । दर्शन, अध्यात्म तथा काव्य एकरस होकर जिस महारस की रचना करते है, वही रस उनके काव्य की अपनी उपलब्धी है । उनका व्यक्तित्व समात्म भाव की साधना में जितना सरल, मधुर, करूण और कोमल हैं, उनका कृतित्व उतना ही उदात्त, व्यापक, विराट एवं महान है । उनकी अतुलनीय प्रतिभा गद्य तथा पद्य की रचनाओं के माध्यम से साहित्य प्रेमियों को सदा ही आकर्षित करती रही है । उनकी प्रतिभा का मूल आधार है मानवीयता एवं संवेदनशीलता । लेखन अवधि में उन्होंने एकनिष्ठ होकर अबाध गति से भावमय सृजन और कर्ममय जीवन की साधना में लिखी हुई बात को सार्थक बनाया ।

एक महादेवीही हैं जिन्होंने गद्य में भी कविता के मर्म की अनुभूति कराई और 'गद्य कवितां निकषं वदन्ति' उक्ति को चरितार्थ किया है । विलक्षण बात तो यह है कि, न तो उन्होंने उपन्यास लिखा, न कहानी, न ही नाटक, फिर भी श्रेष्ठ गद्यकार है । उनके गद्य लेखन में एक ओर रेखाचित्र, संस्मरण या फिर यात्रावृत्त हैं तो दूसरी ओर संपादकीय भूमिकाएँ, निबंध, अभिभाषण पर सब में जैसे संपूर्ण जीवन का वैविध्य समाया है । बिना कल्पनामिश्रीत काव्य रुपों का सहारा लिए कोई रचनाकार गद्य में इतना कुछ अर्जित कर सकता है, यह महादेवी को पढकर ही जाना जा सकता है ।

'स्मृति की रेखाएँ' और 'अतीत के चलचित्र' में निरन्तर जिज्ञासाशील महादेवी ने स्मृति के आधारपर अमिट रेखाओं द्वारा अत्यन्त सहृदयतापूर्वक जीवन के विविध रुपों को चित्रित कर उन पात्रों को अमर कर दिया है । इनमें गाँव, गंवई के निर्धन, विपन्न लोग, बालविध्वाओं, विमाताओं के अत्यन्त सशक्त एवं करुण चित्र हैं । केवल नारियाँ ही नहीं, उपेक्षित पुरूष वर्ग का भी महादेवी ने चित्रण किया है । 'घीसा' 'रामा' 'बदलू' आदि के रेखाचित्र उनके असाधारण मानवतावाद की ओर इंगित करते हैं ।

महादेवी ने अधिकांश, अपने रेखाचित्र में निम्नवर्गीय पात्रों की विशेषताओं, दुर्बलताओं और समस्याओं का चित्रण किया है । सेवक रामा की वात्सल्यपूर्ण सेवा, भंगिन सबिया की पतिपरायणता, घीसा की निश्चिल गुरूभक्ति आदि अनेक विषयों को रेखाचित्र में स्थान दिया है ।

सभी स्मृति चित्रों को महादेवी ने अपने जीवन के भीतर से प्रस्तुत किया है । अंत: यह स्वाभाविक ही है कि, इनमें उनके अपने जीवन की विविध घटनाओं एवं उनके चरित्र के विभिन्न अंशो को स्थान प्राप्त हुआ है । उन्होंने अपनी अनुभूतियों को ज्यों का त्यों यथार्थ के रुप में अंकित किया है । यहाँ यह उल्लेखनीय है कि, महादेवी के रेखाचित्रों

में चरित्र – चित्रण का तत्व प्रमूख रहा है । कथानक उसका अंगीभूत होकर प्रकट हुआ है । उनके इन रेखाचित्रों में गंभीर लोकदर्शन का भी पर्याप्त समावेश हुआ है ।

डॉ. कामिल बुल्के महादेवीजी के ओजपूर्ण व्यक्तित्व के बारे में कहते हैं कि, ''महादेवी के कोमल, संवेदनशील हृदय में मनुष्यमात्र के प्रति कल्याण की भावना कूट–कूटकर भरी हैं ।'' –

(महादेवी वर्मा – एक अध्ययन) डॉ. ललिता अरोरा ।

महादेवी के काव्य में ईश्वर के विरह की प्यार तथा वेदना और पीड़ा इस प्रकार विराजमान है कि, आलोचकों ने उन्हें ''आधुनिक काल की मीरा'' की उपाधि से विभूषित किया है ।

इस प्रकार अपने प्राणों का दीप जलाकर सदा ही दूसरों के प्रति सहृदया रहनेवाली महादेवी जी का जीवन भूतदया एवं करुणा से भरा हुआ है ।

<u>रेखाचित्र घीसा और गुरुभक्ति –</u>

महादेवी जी ने अपने रेखाचित्रों में अनेक चरित्रों के करुणामय स्वरुप का चित्रण किया है । उन सब में घीसा का चरित्र सर्वाधिक कारुणिक और मर्माहत कर देनेवाला है । आर्थिक और सामाजिक विषमताओं की आँधी में जीवन जीनेवाला यह चरित्र दीपक की उस लौ के समान है जो तूफान का भी सामना कर रही है । आलोचकों ने उसे महादेवी का महत्वपूर्ण एवं श्रेष्ठ रेखाचित्र कहा है । घीसा का व्यक्तित्व एवं सत्ता नगण्य थी। किन्तु उसके आन्तरिक गुणों ने महादेवी को अत्यधिक प्रभावित किया। जिस गाँव में स्कूल नहीं, अध्यापक नहीं, जहाँ काले अक्षर भैंस बराबर हैं; ऐसे गाव में महादेवी को घीसा हीरा जैसा शिष्य मिलता है । नाम ही नहीं; घीसा की सारी जिंदगी उपेक्षा का उदाहरण है । घीसा गाँव की प्रतिभा है । गुरू के प्रति उसके मन में भक्तभाव है ।

वैदिक गुरु–शिष्य परंपरा महादेवी–घीसा में दृष्टिगोचर होती है। जिस प्रकार वैदिक काल में गुरुगृह पर जाकर शिष्य विद्यार्जन करते थे और गुरु भी शिष्य को अपना सर्वस्व मानते थे; उसी प्रकार महादेवी जी भी स्वभाव से अत्यंत भावूक होने के कारण समाज के पीडीत एवं शोषित वर्ग के प्रति उनकी सहानुभूति हमें दिखाई देती है । खुद शहरवासी होकर भी झूँसी के खँडहर और आस–पास के गाँवों में वह इन पीड़ित बच्चों को पढाने के लिए हर अवकाश के दिन जाती थी । सामान्य लोग तो अवकाश का दिन अपने सगे–सम्बधियों से मिलने, कहीं उत्सव, समारोह का आनंद लुटाने के लिए बचाकर रखते हैं । किन्तु महादेवी जी गंगा के पार अपनी बूढी भक्तिन के साथ हर इतवार जाती थी । यह भी एक अच्छे शिष्य की तलाश में होनेवाले आदर्श गुरु का उदाहरण है । ठीक उसी प्रकार आदर्श शिष्यत्व भी हमें घीसा में दृष्टिगोचर होता है । अपने गुरू साहेबा की शिष्यों के प्रति तिलमिलाहट मानों घीसा पहचान जाता है । इसी कारण वह अपने गुरुसाहेबा की हर आज्ञा का पालन करता है ।

उपेक्षित एवं कुरुप शरीरवाला घीसा –

नाम की ही तरह घीसा उपेक्षित तथा कुरुप था। घीसा निर्धन परिवार से सम्बध्द था । उसको आर्थिक विषमताओं के साथ–साथ सामाजिक कलंक का धब्बा भी लगा हुआ था । गाँव में घीसा अवैध संतान है यह बात प्रचलित थी । इसी कारण गाँव के अन्य बच्चे उससे दूर रहते थे । हर एक के घर वालों ने अपने बच्चों से घीसा से बोलने के लिए भी मना किया था । बदनसीब घीसा का बाप भी उसके जन्म से पहले मर चुका था । घर में उसकी देख–रेख करनेवाला कोई न था । माँ उसे अपने साथ काम पर ले जाया करती थी । एक ओर से लिटाकर अपना काम करती थी । घीसा अपने पेट के बल पर घसीटते – घसीटते बड़ा हो गया और इसी कारण उसका नाम पड़ा घीसा ।

घीसा दिखने में अत्यंत साधारण लगता था । उसकी शारीरिक बनावट कुछ इस प्रकार की थी कि, उसमें अनुपात नहीं था । पक्के रंग का पीले मुखवाला वह बच्चा वास्तव में अत्यंत दुर्बल था । इस प्रकार दुर्बल और निम्न वर्ग का घीसा एकलव्य की तरह जिज्ञासा भरी सचेत आँखों से निरन्तर घडी की तरह अपने गुरूसाहब के मुख पर देखता रहता था । मानों गुरूसाहब की सारी विद्या–बुद्धि सोख लेना ही उन सचेत आँखों का लक्ष्य था।

घीसा की गुरुभक्ति तथा प्रतिभा का परिचय :

महादेवी रेखाचित्रकार हैं । अर्थात उन्होंने अपने 'घीसा' रेखाचित्र में घीसा के अंदर छुपी गुरुभक्ति का वर्णन किया है । जब झूँसी के खँडहरों में इन देहाती बच्चों को पढाने के लिए महादेवी जी जाती थी । तब बच्चों में सबसे

ज्यादा कुशाग्र बुद्धि बालक घीसा ही गुरू की आज्ञा का पालन करता है । जब महादेवी जी सब बच्चों को पढाती थीं तो सबसे पहले समझने, उसे व्यवहार में स्मरण रखने, पुस्तक में एक भी धब्बा न लगाने एवं स्लेट को चमचमाती रखने में वह कभी पिछे न हटा । जिस प्रकार धनुर्धारी अर्जुन के बाकी साथियों को गुरू द्वारा पूछा गया कि, पेड़ पर क्या दिख रहा है तो कई बालकों ने अनेकानेक उत्तर दिए जो गुरुजी नहीं चाहते थे । तो इसमें से अर्जुन कुशाग्रबुद्धि था और उसी ने ही सही जवाब दिया था कि, ''मुझे पेड़ पर तोते की आँख दिख रही है जो मुझे इस से छेदनी है ।'' उसी प्रकार आज्ञाकारी घीसा का वर्णन महादेवी जी ने किया है । जब अवकाश के दिन अर्थात इतवार के दिन गुरु साहब की पाठशाला की तैयारी के लिए घीसा शनिचर के दिन ही पीपल की पेड़ की छाया में झाड़ू लगाकर गोबर-मिट्टी से चिकनापन दे आता था । फिर मटमैले कपडों में मोटी-रोटी और थोडासा गुड बगल में दबाकर गंगा किनारे जा बैठता था । अपने क्षीण साँवले हाथों से आँखों पर छाया करके गुरु साहब की नीली-सफेद नाव आती देखकर 'गुरु साहब आए' इस प्रकार चिल्लाकर बाकी साथियों को बताने के लिए जाता, फिर पेड़ की नीची डाल पर रखी शीतलपाटी उतारकर बार-बार पोंछकर बिछाता था । फिर गुरु साहब की पढाने की सब तैयारियाँ करता था । इस उदाहरण से भी हमें घीसा का गुरु के प्रति आदर, प्रेम दिखाई देता है ।

महादेवी जी ने घीसा के गुरु की आज्ञापालन का और एक सुंदर उदाहरण दिया है । एक बार महादेवी जी सब बच्चों को साफ सुथरे कपडों में नहाधोकर आने के लिए कहकर जाती है । जब अगले इतवार आती है तो पूरे सप्ताहभर में घीसा को साबुन की टिकीया नहीं मिलती । दुकानदार धान देकर साबुन नहीं दे रहा था, और उसकी माँ की मजदूरी के पैसे मिलने में भी देर थी । अर्थात माँ की मजदूरी के पैसे उन्हें इतवार के एक दिन पहले अर्थात शनिचर की रात मिल जाते हैं । इतवार की सुबह होते ही उसकी माँ उसे साबुन लाकर देती है । तब कहीं जाकर वह फटा-पुराना अंगोछा निकालकर धो डालता है और फिर वही गीला अंगोछा पहनकर पाठशाला में देरी से पहूँचता है । उसका यह आज्ञापालन देखकर महादेवी जी कहती हैं कि- ''जब घीसा नहाकर गीला अंगोछा लपेटे और आधा भीगा कुरता पहने अपराधी के समान मेरे सामने आ खड़ा हुआ तब आँखें ही नहीं मेरा रोम-रोम गीला हो गया । उस समय समझ में आया कि, द्रोणाचार्य ने अपने भील शिष्य से अँगूठा कैसे कटवा लिया था ।''

इस प्रकार घीसा में आदर्श शिष्यत्व का परिचय हमें मिल जाता है ।

घीसा की भूतदया :

घीसा आदर्श शिष्य तो है ही किन्तु उसमें भूतदया, दूसरों के प्रति उदारता तथा मानवेतर प्राणियों से प्यार का झरना बहता हुआ दिखाई देता है । एक दिन महादेवी जी इन देहाती बच्चों को जब ५-६ सेर जलेबियाँ ले गयी तब उन बच्चों की छीना-झपटी के कारण प्रत्येक को पाँच से अधिक न मिल सकीं किन्तु इन पाँचों में सिवा घीसा के कोई तृप्त नहीं हुआ था । हर एक ने और जलेबी पाने के लिए कोलाहल मचा रखा था किन्तु इस कोलाहल में घीसा कहीं गायब हो गया था । वह उन पाँच जलेबियों में से कुछ जलेबी माँ के लिए रखकर, तथा एक अपनी बिना माँ के कुत्ते के पिल्ले को खिलाकर स्वयं के लिए दो रखी । गुरु साहब के 'और चाहिए' पूछने पर उसने संकोचभरी आँखें झुकायी मानों वें आँखें जलेबी माँग रही थी किन्तु उस कुत्ते के पिल्ले के लिए !

इस उदाहरण से भी घीसा के अंदर छिपी मानवता तथा भूतदया हमें दिखाई देती है जोकि, बड़े-बड़े अमीरों के पास नहीं होती जिनके पास होनी चाहीए ।

सच्चा शिष्य और गुरु प्रेम -

घीसा बुखार से बीमार था और उसी वक्त शहर में हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य धीरे-धीरे बढ रहा था इतना कि, उसकी चरम सीमा तक पहूँचने की संभावना थी । इतवार की साँझ सब बच्चों से विदा होकर जब महादेवी जी शहर जाने के लिए चल पड़ी किन्तु घीसा तेज बुखार के कारण पानी की प्यास से जाग उठा । जब उसे पता चला कि, गुरुसाहेबा शहर वापस जा रहीं है और शहर में दंगा हो रहा है तो उसे गुरुसाहब का ध्यान आया । खुद इतना बीमार होकर भी, इतना कि, ठीक से खड़ा भी नहीं हो सकता था, वह हौले-हौले उठा, कभी दीवार, कभी पेड़ का सहारा लेता-लेता गुरु साहब की ओर भागा और गुरु साहब के चरण कमल पकड बैठा । मैं आपको शहर नहीं जाने दूँगा इस

प्रकार वह महादेवी जी को कह रहा था ।

प्रस्तुत उदाहरण द्रोणाचार्य के भील शिष्य एकलव्य के अंगूठे से कम नहीं । घीसा भी अपने प्राणों की परवाह न करते हुए अपने गुरू की चिंता कर रहा था । सचमुच माँ भारती के इन सपूतों को कोटी-कोटी प्रणाम करना तथा उनके आदर्शों पर चलना हमारा कर्तव्य बनता है ।

इस प्रकार जब महादेवी जी साल पूरा होने के बाद बड़ी-छुट्टी बच्चों को देकर वापस शहर जाने निकली तो कोई खुश हो रहा था, दिर्घ छुट्टी मिलने के कारण, तो कोई किताबें मिलने के लिए महादेवी जी से शिकायत कर रहा था किन्तु इन सब में घीसा दिखाई नहीं दे रहा था । संध्या हो चुकी थी । दिन ढल रहा था । कुछ पर्णकुटियों में दिए भी जल चुके थे । आज गुरुसाहब को खाली हाथ विदा नहीं होने देना है । इस प्रकार यह नन्हा-सा ह्रदय अपनी ही गुरू के प्रति ममताभरी सोच में डूब गया था । उसने एक खेतवाले के यहाँ कई दिन पहले एक तरबूज देखा था जो उसे अपने गुरु के लिए 'भेट' रुप में देना था किन्तु घीसा के पास तो पैसा भी नहीं था न ही उसे अपना खुद का खेत था किन्तु उस तरबूजवाले बच्चे की नजर कई दिन पहले घीसा के नये कुरते पर थी । घीसा ने उस तरबुज के बदले वह नया कुरता उस बच्चे को दे डाला और तो और उस दिन घीसा की माँ भी घर देरी से लौटी परिणामवश उसें खुद ही उस अंध:कार में तरबूज लाने के लिए जाना पड़ा । उस धूमिल गोधूली में घीसा नंगे बदन दोनों हाथों में तरबूज सम्हाले गुरुसाहेब की ओर आ रहा था । जब वह तरबूज गुरूसाहब के हवाले करते हुए घीसा बोला कि, ''गुरु साहब को चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि, 'गर्मी में वह कुरता पहनता ही नहीं ।' प्रस्तुत वाक्य पढकर सचमुच पाठक का रोम-रोम पुलकित हो जाता है । तरबूज सफेद न हो, मीठा हो इसलिए जब वह तरबूज का कुछ हिस्सा काटकर फिर उँगली से निकालकर उसे खा लेता है तो यहाँ पर हमें श्रीराम की सच्ची भक्त शबरी के बेरों की याद आती है । अपनी सच्ची भक्त शबरी के जूठे बेर भगवान श्रीराम ने खाए थे । सचमुच किसी उपहार, दक्षिणा का मूल्य पैसों से नहीं बल्कि उसके पीछे छिपी भावनाओं से निश्चित करना चाहिए।

इस अमूल्य गुरु दक्षिणा को प्राप्त करने के बाद स्वयं महादेवी जी भी भावतिरेक से निश्चल होकर कहती हैं कि - ''उस तट पर किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी ऐसा मुझे विश्वास नहीं, परन्तु उस दक्षिणा के सामने संसार के अब तक के सारे आदान-प्रदान फीके जाल पड़े ।''

* * *

''व्यथा''

प्रा.डॉ.सौ. शेख अकीला महेबूब

''वो पेड़ ही क्या
जिसकी छाया न हो,
वो फूल ही क्या
जिसमें सुगंध न हो,
वो गुलशन ही क्या
जिसमें गुल न हो
वो दिल ही क्या
जिसमें मुहब्बत न हो,
वो इंसान ही क्या
जिसमें इंसानियत न हो
वो राष्ट्र ही क्या
जिसमें एकता न हो

इन्सान भी क्या चीज है ?

शेख तौफिक आरिफ

इन्सान भी क्या चीज है ?
दौलत कमाने के लिए
अपनी सेहत खो देता है ।
फिर सेहत को वापस लाने के लिए
अपनी दौलत खो देता है ।
गुजरे हुए कल को सोच कर अपना
हाल जाए करता है ।
फिर गुजरा हुआ कल में
अपना बीता कल याद करके रोता है ।
जीता ऐसा है, कभी मरेगा नहीं
और मर ऐसे जाता है
जैसे कभी जिया नहीं ... !

माँ

श्रीकांत निसाळ

दिन भर काम के बाद ....
पापा पूछते हैं ......
''कितना कमाया ?''
पत्नी पूछेगी ....
''कितना बचाया ?''
बेटा पूछेगा .....
''क्या लाया ?''
लेकिन,
सिर्फ माँ ही पूछेगी ....
''बेटा कुछ खाया ?''

बेटी

कु. धुमाळ सुवर्णा बाळासाहेब
(एस.वाय.बी.कॉम.)

माँ जन्म देने से पहले मत मारो
पापा जन्म देने से पहले मत मारो ।
मैं अंश तुम्हारा मुझे झेलो
बोझ समझकर ना फेंको ।
मेरा कसूर मुझे बता दो,
यू ही बे मौत ना मार दो ।
चाहो तो मुझे अपनापन ना देना
चाहो तो बिलकुल ममता न देना
बस तुम इतना एहसान कर देना
दुनिया में आने से पहले मार न देना
माँ अपना नजरियाँ बदल लो,
बेटी को भी अपना समझ लो ।
आँख खोलने से पहले भुला न देना
खुबसूरत दुनियाँ देखने का हक मुझे दो ।
अँगना में जब मैं आऊँगी
मीठी-मीठी बातें बोलूँगी
हाथ से तेरी उँगली पकड लूँगी
हर सुख-दुख में साथ रहूँगी ।
मैं भी नाम रोशन करुँगी
दुनियाँ में तेरा गुणगान करुँगी ।
मैं तेरी जीवनधारा बनूँगी
बेटे की तरह तेरा सहारा बनूँगी ।

संकलन

डॉ. शेख अकीला महेबूब

१) उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में जिंदगी की शाम हो जाए ।

२) आदमी को आदमी बनाने के लिए
त्याग की एक कहानी चाहिए
इस कहानी को बयाँ करने के लिए
स्याहि नहीं आँखों का पानी चाहिए ।

३) न पूछो कि मेरी मंजिल कहाँ है ?
अभी तो सफर शुरु किया है
न हारुँगा हौसला उम्र भर
मैंने किसी से नहीं खुद से वादा किया है ।

४) फित्रतन हर आदमी है, तालिबे-अम्न व अमान
दुश्मनों को भी मुहब्बत की नजर से देखिए ।

५) सभी कुछ हो रहा है इस तरक्की के जमाने में
मगर ये क्या गजब है, आदमी इन्साँ नहीं होता ।

६) अल्लाह जिसे बचाए, नहीं डूबने का उसे खौफ
मौजे हजार उठती रहें, साहिल के सामने ।

७) रद्दी के भाव बेचने निकले हुए हैं लोग
ये जिंदगी पढ़ा हुआ अखबार तो नहीं ?

८) रवि-शशि भी मेरी भाँति न जल पाते हैं
सुख-दुख भी मेरे साथ न चल पाते हैं
पथ की ऊँची-नीची बाधाओं में भी-
गिरकर मेरे अरमान सँभल जाते हैं ।

९) यह पहेली कुछ समझ में आ न पाई,
हर कली के साथ काँटों की सगाई,
तुम अकेली धूलि का आशीष ले लो,
मैं सितारों से दिला दूँगा बधाई ।

१०) नाज करता है बुलिस्ताँ, ऐसे वीराने हैं हम
मैकदे की लाज रखने वाले पैमाने हैं हम
कोई हमको भूल जाए, है कुछ नहीं इसका खयाल
जिनको दुहराएगी महफिल, ऐसे अफसाने हैं हम ।

जिन्दगी ना मिलेगी दोबारा

शुभम् अनिल मणियार

जन्नत में सब कुछ है, लेकिन मौत नहीं है
गीता में सब कुछ है, लेकिन झूठ नहीं है
दुनिया में सब कुछ है, लेकिन सबर नहीं है...
दोस्तों....
क्या बात करे इस दुनिया की...
जब बचपन था
तो जवानी एक ड्रीम था
जब जवान हुए
तो बचपन डिझायर है....
जब घर में रहते थे
आजादी अच्छी लगती थी
आज अकेले है
हर पल घर के दिन याद आते हैं ....
कभी होटल में जाना
पिझा, बर्गर खाना पसंद था
आज घर पर आना और
माँ के हाथ के खाने में ही
जन्नत मिलती है....
जिनसे झगडते थे स्कूल में,
उन दोस्तों को आज इंटरनेट में तलाशते है
आज कल तो खुश रहने के तरीके भी
हम गुगल में सर्च मारते है .....
फेसबुक से डेटिंग
और फ्लिपकार्ट, से शॉपिंग करते है
घर पर भी बात अब
स्कायपी/जी-टॉल्क
और वॉट्स अप से करते है .....
लाईफ को लॅपटॉप और मोबाईल में
समेट दिया है
हम समझते है हमने खुद को अपडेट
किया है.....
इस नयी दुनिया में हमने
ना जाने क्या घुमा दिया है
कब क्या बदला
हमें कुछ ना पता चला है ....
पैसा मिला
नाम मिला
कुछ है हम भी विश्वास मिला
लेकिन क्या छोड़ा
क्या त्यागा हमनें
इसका ना हिसाब मिला
खुशी किसमें होती है
ये पता अब चला है
बचपन क्या था इसका अहसास
अब हुआ है .....
काश ! बदल सकतें हम
जिन्दगी के कुछ साल पीछे
काश ! जी सकते हम
जिन्दगी एक बार फिरसें .....

* * *

‘‘मेरी कविता’’

प्रा.डॉ.सौ. शेख अकीला महेबूब

मेरी कविता,
न केवल आत्मानुभूति
न ही केवल सच्चाई, निराशा, उपहास
मेरी कविता
नव चेतना, नव आशा
नव दिशा नव दशा
नव उल्लास नव जागरण
मेरी कविता,
स्वर अबलाओं का
स्वर दीन-हीनों का
स्वर प्रेम शांति और त्याग का
स्वर सत्यं, शिवं, सुंदरं का !

कॉलिज की हसीन यादें !

कु. हांडे रविंद्र

कॉलेज के ये दिन हमेशा याद आयेंगे
आज साथ पढते हैं कल बिछड जाऐंगे ....
साथ पढने वाले दोस्त अपने
फिर एक साथ नहीं मिल पायेंगे
आँखें भी इतनी बड़ी नहीं कि
यहाँ का सब सम्हाले जायेंगे
आज कदमों के साथ हैं हम
कल रास्ते अलग हो जायेंगे
दोस्तों के साथ पढने के
दो साल यहीं हँसते–हँसते बीत जाऐंगे
जीवन में फिर मिलेंगे हम
सोचकर यह चले जाऐंगे
अपना–अपना भविष्य बनाने में
हम सब व्यस्त हो जायेंगे
कभी–कभी किसी मोड पर मिल जाएँ तो
ये बीतें हुए लम्हें फिर याद आयेंगे
कॉलेज के ये दिन फिर याद आयेंगे
साथ पढते थे कल बिछड़ जाऐंगे

माँ-बाप को भूलना नहीं

गडाख कोमल चांगदेव

भले ही हर बात भूल जाइये, माँ–बाप को भूलना नहीं ।
अनगिनत हैं उपकार इनके, यह कभी भूलना नहीं ।

धरती के सभी देवताओं की पूजा, तभी आपकी सूरत देखो ।
इन पवित्र व्यक्तियों के दिल, कठोर बनकर तोडना नहीं ।

अपने मुँह का कौर निकाल, तुम्हें खिलाकर बड़ा किया ।
इन अमृत देनेवालों के सामने, जहर कभी उगलना नहीं ।

भीगी जगह में खुद सोकर, सुख में सुलाया तुम्हें ।
ऐसी अनमोल आँखों को, भूल से भी भिगोना नहीं ।

फूल बिछाए प्यार से, जिन्होंने तुम्हारी राहों पर ।
ऐसी कामना करनेवालों की राहों के, काँटे कभी बनना नहीं ।

दौलत से हर चीज मिलेगी, लेकिन माँ–बाँप मिलते नहीं ।
इनके पवित्र चरणों के प्रति, सम्मान कभी भूलना नहीं ।।

संतान से सेवा चाहे तो, संतान बनकर सेवा करें ।
जैसी करनी वैसी भरनी, यह न्याय कभी भूलना नहीं ।

बचपन के वो लम्हें

शुभम् अनिल मणियार

माँ की गोद, पापा के कंधे
आज याद आते है बचपन के वो लम्हें,
रोते हुये सो जाना,
खुद से बात करते हुये खो जाना,
वो माँ को आवाज लगाना
और खाना अपने हाथों से खिलाना
वो पापा का डाँट लगाना,
अपनी ज़िद पूरी करवाने
के लिए नखरे दिखाना,
क्या वों दिन थे बचपन के सुहानें,
क्यों लगते हैं सब आज बेगाने....
अब ज़िद भी अपनी.....
सपने भी अपने....
किस से कहें क्या चाहिए.... ?
मंजिलों को ढूँढते हुए कहाँ खो गये....??
क्यों हम इतने बडे हो गये..... ??

भारत की संतान

कु. पांडे सीमा सरवाहारी

हम हैं भारत की संतान
सदा रहें अभिमान
मेरा भारत महान !
मेरा भारत महान !
स्वार्थ त्याग और परसेवा
नवयुग की है नवयुवा
भारत माता की सेवा में
करेंगे तन-मन-धन का दान
सत्य का सन्धान करेंगे
दुर्बलता धिक्कार करेंगे
मन पावन करके
बनेंगे शूर-वीर बुद्धिमान
हिंसा दुर्बलता का त्याग करेंगे
देंगे सबको अभय वरदान
प्रेम-दया-शांति का विस्तार करेंगे
बढाए भारत का सम्मान ।

विविध गुणदर्शन : कनिष्ठ महाविद्यालय

तबला वादन करतांना विद्यार्थी

कथ्थक् नृत्य सादर करतांना विद्यार्थी

कोळी गीत सादर करतांना विद्यार्थिनी

कराटेचे प्रात्यक्षिक करून दाखवतांना

रोप मल्लखांबाचे प्रात्यक्षिक करतांना

विविध गुणदर्शन : वरिष्ठ महाविद्यालय

कार्यक्रमाचे उद्घाटन प्रसंगी न्यायाधीश मा. क्षिरसागर,
न्यायदंडाधिकारी मा. मुलानी साहेब यांचे समवेत प्राचार्य व शिक्षकवृंद

विरेंद्र मेढे व प्रदीप देशमुख रेखाचित्रण कला सादर करतांना

वैयक्तिक नृत्य सादर करतांना विद्यार्थिनी

सामुहिक नृत्य सादर करतांना विद्यार्थिनी

अगस्ति कला, वाणिज्य व दादासाहेब रुपवते विज्ञान महाविद्यालय, अकोले

सामुहीक नृत्य करतांना विद्यार्थी

अपंग विद्यार्थी मंडलीक आपली कला सादर करताना

'जाऊ बाई जोरात' नाटक (तीन अंकी नाटक)

उद्घाटन प्रसंगी संस्थेचे विस्तारप्रमुख मा.मीनानाथ पांडे, प्राचार्य रमेशचंद्र खांडगे
मार्गदर्शक प्राध्यापक व सहभागी विद्यार्थी कलाकार

नाटकातील शपथविधी प्रसंग

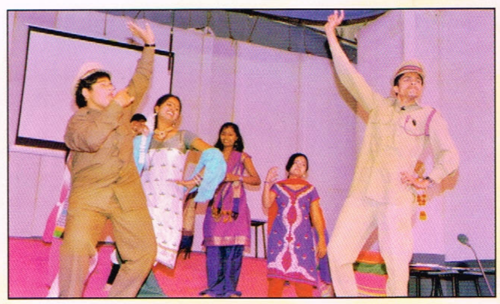

नाटकातील विविध विनोदी क्षण

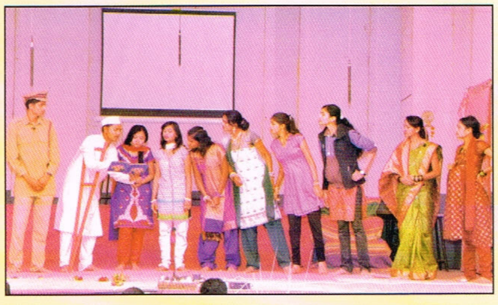

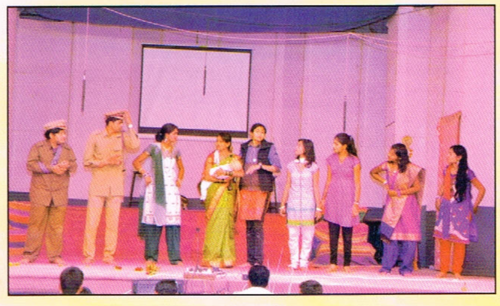

विविध 'डे' सादरीकरण

'मिसमॅच डे' मधील एक केशभूषा

'मिसमॅच डे' मधील एक वेशभूषा

'कॅप डे' मधील सहभागी विद्यार्थिनी

उल्लेखनिय रेखाटने

शेख तौफिक (टी.वाय.बी.कॉम) याने काढलेले रेखाटणे

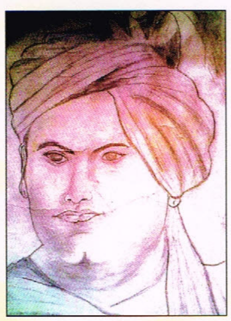

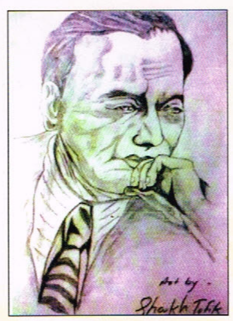

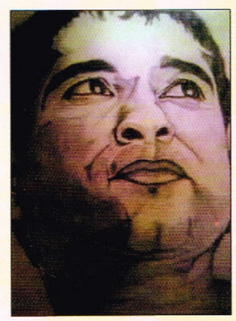

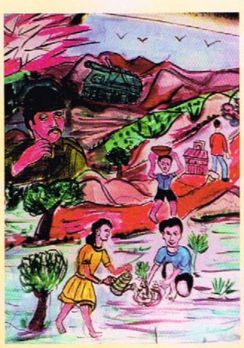

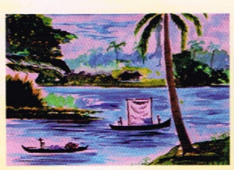

पल्लवी एकनाथ भुजबळ (टी.वाय.बी.कॉम.) यांचे रेखाटन

पारितोषिक वितरण समारंभ

प्रमुख पाहुणे कविवर्य मा. नारायण सुमंत यांना औक्षण करतांना कु. कोमल गडाख

सत्कार स्विकारतांना प्रमुख पाहुणे कविवर्य मा. नारायण सुमंत

पारितोषिक वितरण प्रसंगी विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन करतांना विश्वस्त मा.ॲड. प्रेमानंदजी रुपवते, व्यासपीठावर संस्थेचे विश्वस्त डॉ. बी. जी. बंगाळ, अध्यक्ष जे. डी. आंबरे पा., खजिनदार ॲड. के. बी. हांडे, सदस्य मा. मधुकरराव सोनवणे, सदस्या मा.सौ. कल्पनाताई सुरपुरिया, मा.सौ. आशाताई पापळ, प्राचार्य रमेशचंद्र खांडगे, उपप्राचार्य प्रा. ए.एम. काळे

श्री. शाम वैद्य यास 'स्टुडंड ऑफ दि ईअर' पुरस्कार प्रदान करतांना मा. नारायण सुमंत

कवितांची मैफिल सादर करतांना...

राष्ट्रीय सेवा योजना : कनिष्ठ महाविद्यालय

कार्यक्रम अधिकारी

प्रा. गणपत नवले

प्रतिनिधी

कु. पल्लवी घुले

उद्घाटनप्रसंगी स्वयंसेवकांना मार्गदर्शन करतांना महाविद्यालयाचे प्राचार्य मा. रमेशचंद्र खांडगे

उद्घाटनप्रसंगी मार्गदर्शन करतांना संस्थेचे उपाध्यक्ष मा.ॲड. वसंतराव मनकर व इतर मान्यवर

राष्ट्रीय सेवा योजना वर्धापनदिनानिमित्त स्वयंसेवकांना मार्गदर्शन करतांना ह.भ.प. दिपक महाराज देशमुख

स्वयंसेवकांना मार्गदर्शन करतांना संगमनेर महाविद्यालयाचे प्रा. बाबा खरात

श्री अगस्ति आश्रम परिसरातील साफसफाई करतांना स्वयंसेवक

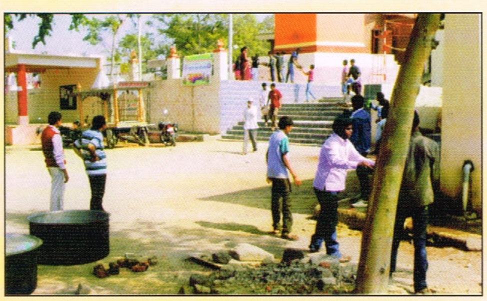

श्री अगस्ति आश्रम परिसरातील साफसफाई करतांना स्वयंसेवक

समारोपप्रसंगी स्वयंसेवकांना मार्गदर्शन करतांना संस्थेचे अध्यक्ष मा.जे.डी.आंबरे पा. व इतर मान्यवर

अगस्ति कला, वाणिज्य व दादासाहेब रुपवते विज्ञान महाविद्यालय, अकोले

राष्ट्रीय सेवा योजना : वरिष्ठ महाविद्यालय

कार्यक्रम अधिकारी

प्रा.डॉ. बाबासाहेब देशमुख

प्रतिनिधी

शंकर संगारे

कर्मवीर भाऊराव पाटील कमवा व शिका योजना व राष्ट्रीय सेवा योजनेचे उद्घाटन करतांना प्रमुख पाहुणे प्रा. रोहिदास कोल्हे सर संस्थेचे पदाधिकारी, प्राचार्य व शिक्षकवृंद

राष्ट्रीय सेवा योजना उद्घाटनप्रसंगी मार्गदर्शन करतांना प्रा.डॉ. बाबासाहेब देशमुख

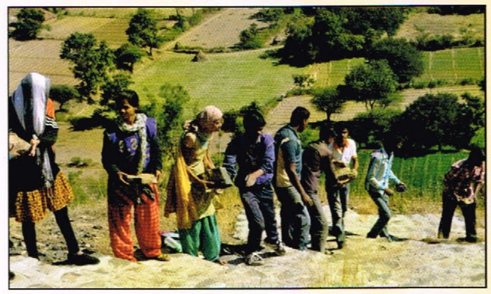

श्रमदान करतांना एन.एस.एस.चे विद्यार्थी विद्यार्थिनी

श्रमदान करतांना एन.एस.एस.चे विद्यार्थी विद्यार्थिनी

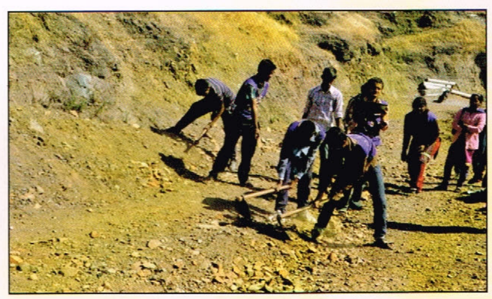

श्रमदान करतांना एन.एस.एस.चे विद्यार्थी विद्यार्थिनी

समारोपप्रसंगी स्वयंसेवकांसमोर आपले मनोगत व्यक्त करतांना संस्थेचे अध्यक्ष मा.जे.डी.आंबरे पा. व मान्यवर

समारोपप्रसंगी स्वयंसेवकांसमोर आपले मनोगत व्यक्त करतांना पत्रकार श्री. डी. के. वैद्य व मान्यवर

राष्ट्रीय सेवा योजना : वरिष्ठ महाविद्यालय

एन.एस.एस.स्वयंसेवक विद्यार्थिनी आपले मनोगत व्यक्त करतांना

एन.एस.एस. योजनेचे स्वयंसेवक प्रवरा नदीपात्राची स्वच्छता करतांना

एन.एस.एस. आयोजित पर्यावरण व कन्यारत्न अभियान दिंडीत सहभागी विद्यार्थी

एन.एस.एस. आयोजित पर्यावरण व कन्यारत्न अभियान दिंडीत सहभागी विद्यार्थी

एन.एस.एस. आयोजित पर्यावरण व कन्यारत्न अभियान दिंडीत सहभागी विद्यार्थी

एन.एस.एस. आयोजित आरोग्य तपासणी शिबिर

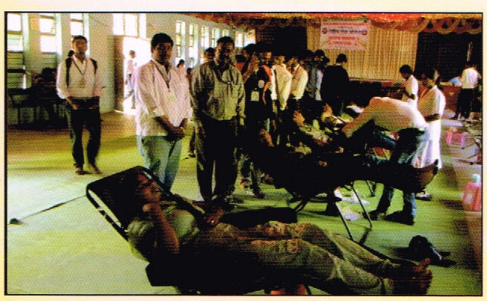

एन.एस.एस. आयोजित रक्तदान शिबिर

गणेश मूर्तीदान स्वीकारतांना संस्थेचे खजिनदार, प्राचार्य व स्वयंसेवक

अगस्ति कला, वाणिज्य व दादासाहेब रुपवते विज्ञान महाविद्यालय, अकोले

संगणकशास्त्र व व्यवस्थापन विभाग

प्रथम वर्षात प्रवेश घेतलेल्या विद्यार्थ्यांचे स्वागत समारंभ प्रसंगी संस्थेचे अध्यक्ष, सदस्य, प्राचार्य व शिक्षकवृंद

प्रथम वर्षात प्रवेश घेतलेल्या विद्यार्थ्यांचे स्वागत समारंभ प्रसंगी मार्गदर्शन करतांना संस्थेचे अध्यक्ष, सदस्य, प्राचार्य व शिक्षकवृंद

प्रथम वर्षात प्रवेश घेतलेल्या विद्यार्थ्यांचे स्वागत समारंभ प्रसंगी मार्गदर्शन करतांना विभागप्रमुख प्रा. के. एस. गुंजाळ

संगणक प्रदर्शन उद्घाटन कार्यक्रम प्रसंगी प्रमुख पाहुणे सिनेअभिनेते मा. भूषण प्रधान यांचे महाविद्यालयात स्वागत करतांना मा. प्राचार्य

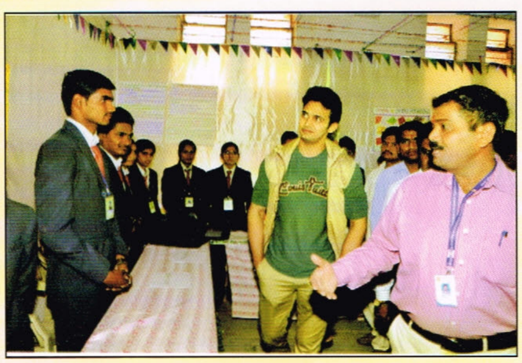

संगणक प्रदर्शनातील सहभागी विद्यार्थ्यांचे प्रकल्पांचे निरीक्षण करतांना प्रमुख पाहुणे मा. भूषण प्रधान

संगणक प्रदर्शनातील सहभागी विद्यार्थ्यांच्या भित्तिपत्रकांचे निरीक्षण करतांना प्रमुख पाहुणे मा. भूषण प्रधान

राष्ट्रीय छात्र सेना (NCC)

स्वातंत्र्य दिना प्रसंगी शहीदांना पुष्पचक्र अर्पण करतांना अध्यक्ष मा.जे.डी.आंबरे पा.

ध्वजवंदन करतांना संस्थेचे अध्यक्ष, मा. जे. डी. आंबरे पा., सदस्या सौ. कल्पनाताई सुरपुरिया व मा.प्राचार्य रमेशचंद्र खांडगे

स्वातंत्र्य दिनी परेड निरीक्षण करतांना मा.प्राचार्य रमेशचंद्र खांडगे

श्रीकृष्ण भांगरे

आर.डी.सी. २०१४ साठी निवड होऊन राजपथ येथील संचलन परेडमध्ये सहभाग

पंतप्रधान रॅली परेड न्यु दिल्ली प्रसंगी महाराष्ट्र कॉन्टीनजन्ट यात सहभागी U/o श्रीकृष्ण भांगरे

आर.डी.सी. सिलेक्शन ग्रुप औरंगाबाद

महाराष्ट्र 'बॅनर फ्लॅग' सोबत श्रीकृष्ण भांगरे

राष्ट्रीय छात्र सेना (NCC)

प्रजासत्ताक दिनी २६/११ शहीदांना मानवंदना देताना संस्थेचे अध्यक्ष, प्राचार्य, सर्व स्टाफ व एन.सी.सी. छात्र

ध्वजवंदन करतांना मा.प्राचार्य रमेशचंद्र खांडगे

एन.सी.सी. परेडचे निरीक्षण करतांना मा. प्राचार्य

मा.कर्नल पी.एस.देशपांडे एन.सी.सी. छात्र सैनिकांची मानवंदना स्विकारतांना समवेत बटालीयन स्टाफ व एन.सी.सी. अधिकारी मेजर बी.आर.शिंदे, प्रा. एस. ए. पाळंदे

मा.कर्नल पी.एस.देशपांडे यांचा सत्कार करतांना मा.प्राचार्य रमेशचंद्र खांडगे, एन.सी.सी. प्रमुख एस.ए.पाळंदे, विद्यार्थी मंडळाचे अध्यक्ष प्रा. राहुल वाघमारे डॉ. बी. एस. देशमुख

मा.कर्नल पी.एस.देशपांडे परेड निरीक्षण करतांना

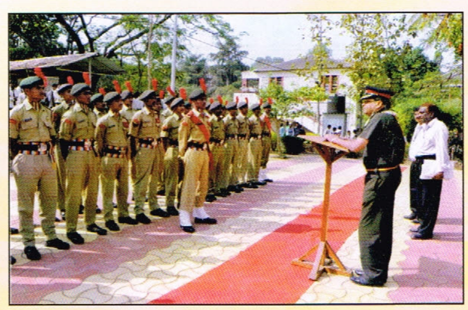

मा.कर्नल पी.एस.देशपांडे एन.सी.सी. छात्र सैनिकांना अभिभाषण देतांना